(शेषांश)

महाकवि कालिदास के जन्म स्थान के विषय में भी संस्कृत साहित्य के इतिहास के समालोचकों में पर्याप्त मतभेद है। इस संदर्भ में स्वर्गीय डा. लक्ष्मीधर जी के वचन ध्यान देने योग्य हैं। वे कहते हैं- ''कालिदास इतने व्यापक और सार्वभौम संवेदनाओं के कवि हैं और उनका मन राष्ट्रीयता की भावना से इतना ओत-प्रोत है कि उनकी रचनाओं के आधार पर यह जान लेना कि भारतवर्ष के किस विशेष भाग या भागों में वे उत्पन्न हुए और कहां उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय व्यतीत किया, सुलभ नहीं।'' महाकवि कालिदास इस विशाल देश के कोने-कोने से सुपरिचित हैं तथा उन्होंने अपनी कृतियों में इस देश के विभिन्न भू-भागों, पशुओं, पक्षियों, पेड़-पौधों, और यहां के निवासियों की रीतियों, प्रथाओं और विश्वासों का इतना यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है कि देश के किसी विशेष स्थान या प्रान्त को उनकी जन्म-भूमि सिद्ध करना व्यावहारिक दृष्टि से असम्भव प्रतीत होता है। विद्वानों ने कालिदास को बंगाल, कश्मीर, मालवा, विदर्भ, गढ़वाल प्रान्त के निवासी बताकर मत-भिन्नता प्रकट की है। अतएव कालिदास के जन्म स्थान की समस्या का कोई हल अभी तक नहीं निकला है और यह समस्या अभी तक उसी प्रकार उलझी हुई है। इस सन्दर्भ में केवल एक ही बात कुछ निश्चय के साथ कहीं जा सकती है कि कालिदास ने अपने जीवन का बहुत-सा भाग मालवा देश में, विशेष रूप से उज्जैन नगर में व्यतीत किया होगा क्योंकि इसके सौंदर्य और वैभव

का उन्होंने रचनाओं में बड़ी तन्मयता और रुचि के साथ वर्णन किया है और इससे सम्बन्धित अपने अनुभवों को विशेष वाणी दी है। इस महान् कवि के व्यक्तिगत जीवन के विषय में भी हमें वास्तविक ज्ञान उपलब्ध नहीं है। किसी विश्वसनीय प्रमाण के न होने से कालिदास के जीवन के विषय में अनेक प्रकार की कथाएं कल्पित कर ली गई हैं। इनमें से अत्यधिक लोकप्रिय कथा उनके बारे में यह सुनने में आती है कि वे जन्म से वज्रमूर्ख थे और कुछ पण्डितों के षडयंत्र के कारण उनका विवाह विद्योत्तमा नामक विदुषी राजकुमारी से हो गया। विद्योत्तमा ने शास्त्रार्थ में पण्डितों को पराजित कर दिया था और उन्होंने अपनी पराजय का बदला चुकाने के लिए धोखे का एक जाल बिछाया और राजकुमारी का मूर्ख कालिदास से विवाह करवा दिया। उनके विषय में एक अन्य अत्यधिक लोक-प्रचलित यह कथा प्रसिद्ध है कि लंका की राजनर्तकी ने जिसके साथ वे अपने आश्रयदाता विक्रमादित्य के साथ किसी कारण से झगड़ा हो जाने के कारण गुप्त रूप से निवास कर रहें थे, उनकी हत्या कर दी। कालिदास के बहुत बाद के कुछ कवियों जैसे बल्लाल ने उन्हें धारा नगरी के सम्राट् भोज का राजकवि बताया है और कुछ ने सोचे-समझे बिना ही उन्हें परवर्ती कवियों जैसे दंडी, भवभूति आदि का समकालीन बना दिया है। कालिदास की कृतियों का अनुशीलन करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि वे जाति से ब्राह्मण और भगवान शिव के परमभक्त थे तथापि विष्णु एवं अन्य अवतारों एवं देवताओं के प्रति उनकी रुचि उनके स्मार्त होने की परिचायिका है। उन्होंने प्राचीन धर्मग्रंथों और शास्त्रों एवं भारतीय दर्शन के विभिन्न

सिद्धांतों का गहन अध्ययन किया था तथा व्याकरण, राजनीति, छन्द-शास्त्र, काव्य-शास्त्र जैसे दुरूह विषयों का भी उन्हें पूर्ण ज्ञान था।

कालिदास को बहुत से ग्रंथों का रचयिता माना जाता है। प्रोफेसर एम. आर. काले ने लगभग चालीस (40) ऐसे ग्रंथों का उल्लेख किया है कि जिन्हें कालिदास द्वारा लिखा माना जाता है। परन्तु इनमें से केवल सात हीऐसे ग्रंथ हैं जिन्हें विद्वान् सर्वसम्मति से कालिदास द्वारा लिखा स्वीकार करते हैं। वे ग्रंथ हैं:

(क) ऋतुसंहार और मेघदूत: दो खण्ड काव्य।

(ख) कुमारसम्भवम् और रघुवंशम्: दो महाकाव्य।

(ग) मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् और अभिज्ञान-शाकुन्तलम्: तीन नाटक।